नाम: डॉ॰ सुजाता गुप्ता
विभाग: हिंदी
वर्ग: स्नातक द्वितीय प्रतिष्ठा
पत्र: IV
शीर्षक — 'यह दीप अकेला'
कवि — अज्ञेय

भारतीय चिंतन की एक विख्यात परंपरा रही है, जिसमें घोर व्यक्तिवाद भी अन्ततः समष्टि में ही समाहित होता है। ऐसी ही कुछ भावना हमें अज्ञेय के काव्यों में भी प्राप्त होती है। 'व्यक्ति स्वातंत्र्य' की उद्घोषणा करनेवाले प्रमुख कवियों में से एक अज्ञेय भी हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, दोनों के बाद की उपजी स्थितियों ने मोहभंग (आदर्शों का) को दर्शाया। मगर, इसके साथ ही उस विराट के प्रति अपनी (मनुष्य की) नगण्यता का बोध भी अज्ञेय की कविताओं का विषय बना। अपनी वैयक्तिक विशेषताओं को सुरक्षित रखते हुए समष्टि का अंग बनना ही 'यह दीप अकेला' कविता की केन्द्रीय व्यवस्था है।

इस कविता में कवि एक ऐसे दीप की बात करता है, जो स्नेह और गर्व से ओतप्रोत है और स्वयं में मदमस्त भी है। किंतु आज वह अकेला है। कवि इस अकेले दीप को पंक्ति में शामिल करने की बात कहता है। अकेलापन अहंकार का प्रतीक होता है, जिसमें उस दीप की ऊर्जा और भव्यता सीमित ही रह जाती है। पंक्ति में शामिल होने के पश्चात् उसकी महत्ता बढ़ जाती है। यही महत्ता उसे सार्थकता प्रदान करती है। यद्यपि अपनी वैयक्तिक स्वतंत्रता में भी वह योग्य और ऊर्जावान है, मगर समाज के साथ मिलकर उसका स्वरूप और प्रखर और ओजस्वी हो जाएगा। समाज के साथ जुड़कर इन दोनों का कल्याण हो जाएगा। दीप पंक्ति में स्थान पाकर अधिक बल के साथ समाज में जुड़ जाता है, जिससे एकीकार होकर वह स्वयं के साथ-साथ समाज का भी विकास करता है।

"यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति को दे दो।"

इस दीप को असहाय नहीं समझा जाना चाहिए, यह उत्तम गुणों से परिपूर्ण है। कवि इस दीप को पंक्ति में समाहित करना चाहता है, जिससे उसका एकाकीपन दूर हो। वह अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं को साथकर, उसका प्रयोग समाज के विकास के हित में करे। समाज के साथ-साथ राष्ट्र का भी कल्याण निहित है। 'दीप' व्यक्ति का, 'तेल' स्नेह का और उसकी 'लहलहाती लौ' निज दर्प का प्रतीक है। कवि दीप का समाज में विलय हेतु उसकी सर्वव्यापकता की उद्घोषणा कर रहे हैं।

जिस प्रकार गीत, अपने गायन के बिना अधूरा है और एक सच्चा गोताखोर वही है, जो समुद्र के गर्भ से मोती को पा सके। और गीत को जब तक लोगों के द्वारा गाया नहीं जा सके, तब तक उसकी पहचान निरर्थक ही है। उसी प्रकार समुद्र तल में भी अनेक मोती बिखरे हुए हैं, परंतु उनमें से कोई भी बाहर आ पाता है। कौशल पूर्ण गोताखोर ही उसे बाहर निकाल सकते हैं। यज्ञ की अग्नि, प्रथम आहुति कोई हठी ही व्यक्ति आकर देगा। क्योंकि समाज में परिवर्तन तो एक बिड़ला ही कर सकता है। प्रत्येक मनुष्य में यह साहस कहाँ है? कवि स्वयं को ही समाज के प्रति समर्पित करते हैं।

"यह समिधा : ऐसी आग हठीला बिरला सुलगायेगा
यह अद्वितीय : यह मैंने : यह मैं स्वयं विसर्जित :"

यदि व्यक्ति सर्वगुण संपन्न भी है, तो भी उसकी सार्थकता समाज के साथ ही है। समाज से अलग-थलग होकर भी वे गुण उसके किसी काम के नहीं और ना ही समाज के हितों के काम आएंगे। यद्यपि यह सत्य भी है कि वह अकेला निरर्थक नहीं है, मगर उसके विलय से समाज को मजबूती प्रदान होगी। यही राष्ट्रहित भी है।

Scanned with CamScanner

आगे की पंक्तियों में कवि मधु की विशेषता उसके बनने के ढंग अंतराल के द्वारा बतलाते हैं। तब कहीं आकर उसकी मिठास को चखते हैं। जिस प्रकार कामधेनु का अमृत दूध सबों को पेय हेतु नहीं प्राप्त होता, जिस प्रकार धरती की ठोस सतह को उभारकर नन्हा अंकुर निर्भय हो निकलता है। उसी प्रकार यह प्रकृत, स्वयंभू और ब्रह्म समान अंकुर, सूर्य की ओर तनकर देखता है। इसको भी शक्ति के सम्मिलित रूप में प्रदत्त करना चाहिए।

मनुष्य जो कि एक लघु प्राणी है। अपनी निज लघुता का एहसास करते हुए अपने सारे दुस्सह एहसास, अपनी पीड़ाओं को उसने स्वयं सहा है। उसे निरंतर लोगों की अवज्ञाएँ और अपमान को सहना पड़ा। उसे द्रवित होकर स्वयं को इस पीड़ा में जलना पड़ा। मगर कुत्सा और अवहेलनाओं के अंधकार ने भी उसकी प्रखर बुद्धि, जिज्ञासा और श्रद्धा को जीवित रखा— इन सभी मानवीय गुणों को लिए वह समष्टि के प्रति समर्पित होना चाहता है।

कवि इस कविता में 'दीपक' को आधार बनाकर स्वयं को निज मनुष्य के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। यद्यपि इस अकेले जीवन में वह अपने व्यक्तित्व को विशाल बनाकर सार्थकता प्रदान कर रहा है। मगर बगैर किसी दबाव या अनुरोध के, वह स्वयं ही अपनी महत्ता को समाज के साथ खड़ा करना अधिक श्रेयस्कर समझता है। कवि आपनी लघु मानव वाद की प्रतिष्ठा की स्थापना करता है, मगर उसकी उपयोगिता समाज के हितों के स्वार्थ अधिक आवश्यक है। यहीं वह गुणों से परिपूर्ण अपनी सत्ता को समाज के लिए समर्पित करता है। इसी कार्य में उसके जीवन की सार्थकता भी है।

Scanned with CamScanner